बी.ए./ बी.एस-सी./ बी.कॉम./ बी.एच.एस.सी. भाग- तीन

(आधार पाठ्यक्रम)

प्रथम प्रश्नपत्र

हिंदी भाषा

कोड....

पूर्णांक 75

क्रेडिट 05

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:-

1. हिंदी साहित्य की मूल संवेदना से सामान्य रूप से परिचित कराना ।
2. भारत की सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण संबंधी समग्र राष्ट्रीय विकास की रणनीति के विषय में सामान्य जानकारी प्रदान करना।
3. हिंदी में अभिव्यक्ति की पद्धतियों से अवगत कराना एवं उनके संप्रेषण कौशल में वृद्धि करना।
4. कामकाजी भाषा का सम्यक ज्ञान प्रदान करना।

23/2/23

23.2.2023

23/2/23

इकाई 1 (क) भारत माता : सुमित्रानंदन पंत शहर से सोचता हूँ : विनोद कुमार शुक्ल (ख) कथन की शैलियाँ: 1. विवरणात्मक शैली 2. मूल्यांकनपरक शैली 3. व्याख्यात्मक शैली 4. विचारात्मक शैली	अंक 15 18 कालखंड
इकाई 2(क)सूखी डाली : उपेंद्रनाथ अश्क अपोलो का रथ : श्रीकांत वर्मा (ख) विभिन्न संरचनाएँ 1. विनम्रता सूचक संरचना 2. विधिसूचक संरचना 3. निषेधपरक संरचना 4. कालबोधक संरचना 5. स्थान बोधक संरचना 6. दिशाबोधक संरचना 7. कार्य-कारण संबंध संरचना 8. अनुक्रम संरचना	अंक 15 18 कालखंड
इकाई 3 (क) रहीम चाचा: शानी निमित्त : भीष्म साहनी (ख) कार्यालयीन पत्र 1. परिपत्र 2. आदेश 3. अधिसूचना 4. ज्ञापन 5. अनुस्मारक 6. पृष्ठांकन	अंक 15 18 कालखंड
इकाई 4(क) आज भी खरे हैं तालाब (आज भी खरे हैं तालाब काअध्याय) : अनुपम मिश्र एक गाँव में विश्व पर्यावरण वर्ग (धरती की पुकार का अध्याय) : सुंदरलाल बहुगुणा (ख) समसामयिक विषयों पर एक निबंध (शब्द सीमा 250)	अंक 15 18 कालखंड
इकाई 5 (क)संस्कृतिऔरराष्ट्रीयएकीकरण : योगेश अटल शक्तिमानता का अर्थशास्त्र :ओंकारशरणश्रीवास्तव	अंक 15 18 कालखंड

23/2/23

23.2.2023

(ख) घटनाओं, समारोहोंका प्रतिवेदन, विभिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्र	

मूल्यांकन योजना:-

प्रत्येक इकाई से एक-एक प्रश्न पूछे जाएंगे। एक प्रश्न के 15 अंक होंगे। प्रत्येक प्रश्न में आंतरिक विकल्प होगा। प्रत्येक प्रश्न के दो भाग 'क' और 'ख' होंगे एवं अंक क्रमश:08 एवं 07 होंगे। प्रश्नपत्र का पूर्णांक75 निर्धारित है।प्रश्नपत्रकेपूर्णांककादसप्रतिशतअंकआंतरिकमूल्यांकनकेलिएनिर्धारितहै।

पाठ्यक्रम के संभावित परिणाम:-

1. हिंदी साहित्य से सामान्य परिचय हो सकेगा ।
2. हिंदी में अभिव्यक्ति की पद्धतियों से परिचय होगा एवं उनके संप्रेषण कौशल में वृद्धि हो सकेगी।
3. कामकाजी भाषा लेखन का कौशल विकसित हो सकेगा ।
4. भारतीय संस्कृति के समन्वयात्मक स्वभाव के प्रति विश्वास जागृत हो सकेगा।

23/2/23 23.2.2023 23/2/23

त्रिवर्षीय उपाधि पाठ्यक्रम
(सत्र–2022–23)

[redacted]

प्रथम – प्रश्नपत्र
छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य

पूर्णांक : 75
क्रेडिट – 5, 90 कालखण्ड

प्रस्तावना एवं उद्देश्य –

1. छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति के प्रति रूचि और सजगता का विकास।
2. छत्तीसगढ़ी भाषा के स्वरूप से परिचय।
3. लोक– साहित्य तथा उसकी विभिन्न विधाओं से परिचय तथा छत्तीसढ़ी लोक–संस्कृति के प्रति जागरूकता का विकास।
4. समकालीन छत्तीसगढ़ी साहित्य से परिचय।
5. छत्तीसगढ़ी भाषा के संरचनात्मक एवं प्रयोजनात्मक पक्ष से परिचय।
6. छत्तीसगढ़ी के सामाजिक जीवन एवं संस्कृति तथा व्यवहार से सामान्य परिचय।

पाठ्य विषय :

इकाई – 01 छत्तीसगढ़ी भाषा : संरचनात्मक विशेषताएँ एवं प्रयोजनीयता — 18 कालखण्ड

क. छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक कोटियाँ

संज्ञा, सर्वनाम, विषेषण, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन और कारक

ख. 1. कार्यालयीन पत्र व्यवहार

2. रेडिया पत्रकारिता : उद्घोषणा, रेलवे, आकाशवाणी एवं अन्य

इकाई – 02 क. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य – 1 : अर्थ, स्वरूप एवं महत्व — 18 कालखण्ड

ख. छत्तीसगढ़ी लोक काव्य :

करमा – 1 चोला रोवत हे राम बिन देखे परान

2. करिया सियाही कागद लिख ना गा

सुवा गीत : – 1. पहिली गबन के मोला डेहरी बैठाये

2. तरी नरी न न ना तरी नरी ना ना

ददरिया :– 1. कया के पेड मा, हड़िया के मारे, तवा के रोटी, पीपर के पाता, तोर मन चलती, फूटहा रे मंदिर मोर जरत करेजा, गोरी के अचरा, नबा घर मा, बंदा तो दाई

23/02/2

इकाई – 03 क. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य – 18 कालखण्ड

2 लोक नाट्य नाचा : (सामान्य परिचय)

गम्मत : माया–परीच्छा

पंथीगीत – 1 सत्यनाम सार ....2 माटी के चोला......

ख. छत्तीसगढ़ी लोक कथाएं : 1. जा रे ठेकवा नेवता खा

2. घोड़ी वाला जिमींदार

इकाई – 04 आधुनिक छत्तीसगढ़ी काव्य : ऐतिहासिक विकास 18 कालखण्ड

क. छत्तीसगढ़ी काव्य : संत काव्य परंपरा – 1 संत धर्मदास– तीन पद

क. गुरू पइंया लागों नाम लखा दीजो हो।
ख. नैन आगे ख्याल घनेरा।
ग. भजन करौं भाई रे, अइसन तन पाय के।
(सन्दर्भ– धर्मदास के शब्दावली से उद्धृत)

ख. छत्तीसगढ़ काव्य : आधुनिक काव्य – 1 भगवती लाल सेन –

1 दही के भोरहा मां

2. आ गे बसंत

2. विनय कुमार पाठक

1. तँय उठथस सुरूज उथे

2. एक किसिम के नियाव

3. जीवनलाल यदु

1. बादर करय साहूकारी

2. चेत चेत रे चिरैय्या

इकाई – 05 क. आधुनिक छत्तीसगढ़ी गद्य – ऐतिहासिक विकास 18 कालखण्ड

1. छत्तीसगढ़ी कहिनी – 1. केयूर भूषण – ऑसूं म फिले अंचरा,

2. डॉ. परदेशी राम वर्मा – लोहार बारी

2 छत्तीसगढ़ी निबंध – 1. लखन लाल गुप्त – सोनपान

2. डॉ. सत्यभामा आडिल – सीख – सीख के गोठ

अंक विभाजन–

3 व्याख्याएं	21 अंक
2 आलोचनात्मक प्रश्न	24 अंक
3 लघु उत्तरीय प्रश्न	15 अंक
15 अति लघु उत्तरीय प्रश्न	15 अंक

कुल – 75 अंक

23/02/23

23.2.2023

(6).

संदर्भ ग्रंथ–

1.छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य, संपादक – डॉ.सत्यभामा आड़िल (प्रकाशक–विकल्प प्रकाशन, रायपुर, छ.ग.)
2.जनपदीय भाषा–साहित्य छत्तीसगढ़ी, संपादक– डॉ.सत्यभामा आड़िल (प्रकाशक–छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी वि.वि. परिसर, रायपुर, छ.ग.)
3. मानक छत्तीसगढ़ी व्याकरण – चंद्रकुमार चंद्रकार
4. छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक कोटियां – डॉ. चितरंजन कर
5 छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य व संस्कृति के विकास में डॉ. विनय पाठक का योगदान–डॉ. मनीष कुमार दीवान, छत्तीसगढ़ टुडे पब्लिकेशन, रायपुर

पाठ्यकम अध्ययन की परिलब्धियॉ (CLO) :

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने क पश्चात् विद्यार्थी –

1. छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति के प्रति अभिमुख होगे।
2. छत्तीसगढ़ी भाषा के स्वरूप का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।
3. लोक साहित्य एवं उसकी विभिन्न विधाओं से परिचय होगा।
4. छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति के प्रति जागरूकता का विकास होगा।
5. छत्तीसगढ़ी समकालीन साहित्य से परिचय होगा।
6. छत्तीसगढ़ी भाषा के संरचनात्मक एवं प्रयोजनात्मक पक्ष से परिचत होगें
7. छत्तीसगढ़ी के सामाजिक जीवन एवं संस्कृति तथा भाषा व्यवहार से परिचय होगा।
8. छत्तीसगढ़ी भाषा के क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों को तैयार करना।
9. राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना

23/02/23

बी.ए. भाग–3
(हिंदी साहित्य द्वितीय प्रश्नपत्र)
हिंदी भाषा–साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन

पूर्णांक 75
क्रेडिट – 5, 90 कालखण्ड

प्रस्तावना : हिंदी भाषा का इतिहास जितना प्राचीन है उतना ही गूढ़–गहन भी। इसमे रचित साहित्य ने लगभग डेढ़ हजार वर्षो का इतिहास पूरा कर लिया है। इसलिए हिंदी भाषा और साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन की बड़ी आवश्यकता है। साथ–साथ हिंदी ने अपना जो स्वतंत्र साहित्य शास्त्र निर्मित किया है उसे भी रूपायित करने की आवश्यकता है। संज्ञान द्वारा विद्यार्थी की मर्मग्राहिणी प्रतिभा का विकास होगा और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शुद्ध साहित्यिक विवेक का समावेश होगा।

पाठ्य विषय :

(क) हिंदी भाषा का स्वरूप–विकास : हिंदी की उत्पत्ति, हिंदी की मूल आकर भाषाएँ तथा विभिन्न विभाषाओं का विकास।
हिंदी भाषा के विभिन्न रूप– 1.बोलचाल की भाषा 2.रचनात्मक भाषा 3.राष्ट्रभाषा 4.राजभाषा 5.संपर्क भाषा 6.संचार भाषा।
हिंदी का शब्द भंडार– तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दावली।

(ख) हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल एवं मध्यकाल (पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल, युगीन प्रवृत्तिया)

(ग) आधुनिक काल :सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युगीन प्रवृत्तियाँ।
विशिष्ट रचनाकार, और उनकी प्रतिनिधि कृतियॉ, साहित्यिक विशेषताएँ।

(घ) काव्यांग : काव्य का स्वरूप एवं प्रयोजन। रस के विभिन्न भेद, अंग, विभावादि तथा उदाहरण।
प्रमुख पाँच छंद : दोहा, सोरठा, चौपाई, कुंडलियाँ तथा सवैया।
अलंकार : शब्दालंकार–अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश।
अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्पेक्षा, अतिशयोक्ति, भ्रांतिमान तथा संदेह अलंकार।

अंक विभाजन :

4 आलोचनात्मक प्रश्न	44 अंक
4 लघुउत्तरीय प्रश्न	16 अंक
15 वस्तुनिष्ठ / अतिलघुउत्तरीय प्रश्न	15 अंक
कुल	75 अंक

23/02/23

इकाई विभाजन :

इकाई एक	– हिंदी भाषा का स्वरूप– विकास (खण्ड–क)	18 कालखण्ड
इकाई दो	–हिंदी का शब्द भंडार (खण्ड–क, का अंतिम भाग)	18 कालखण्ड
इकाई तीन	–हिंदी साहित्य का इतिहास (खण्ड–ख एवं ग)	18 कालखण्ड
इकाई चार	–काव्यांग– रस, छंद, अंलकार (खण्ड–घ)	18 कालखण्ड
इकाई पाँच	–लघुत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यकम से)	18 कालखण्ड

संदर्भ ग्रंथ :

1.हिंदी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. सुनील त्रिवेदी एवं बाबूलाल शुक्ल, (प्रकाशक– म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग)

2.राजभाषा हिंदी –मलिक मोहम्मद (प्रभात प्रकाशन दिल्ली)

3.हिंदी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी

4.हिंदी भाषा साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन – डॉ. प्रतिभा चतुर्वेदी, डॉ. हरिमोहन बुधोलिया (प्रकाशक–मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी)

पाठ्यकम अध्ययन की परिलब्धियॉं (CLO)

1. हिंदी भाषा के आधारभूत ज्ञान प्राप्ति के साथ, हिंदी के विविध रूपों से अवगत कराना।
2. हिंदी के शब्द भंडार से परिचित कराना जिससे विद्यार्थियों की भाषा समृद्ध और परिमार्जित हो सके।
3. भाषा साहित्य तथा संस्कृति के प्रति विद्यार्थियों की समझ और विवेक को विकसित करना।
4. हिंदी साहित्य के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी देकर विद्यार्थियों को साहित्य की प्रमुख युगीन प्रवृत्तियों के साथ विकास क्रम से अवगत कराना तथा उस काल की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भी परिचित कराना।
5. काव्यांग विवेचन में अलंकारों और छंदों का अध्ययन कर भाषा के सौंदर्य के साथ–साथ, काव्य– परंपरा को भी समृद्ध करना।

23.2.23

23/02/23